P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# सरस्वती दूषदूती नदी घाटी की भौगोलिक संरचना एवं पुरातत्वीय महत्व

**नीलम गौर**
प्राचार्या,
सह प्राध्यापक,
व्यापार मण्डल कन्या
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हनुमानगढ, राजस्थान, भारत

**सारांश**

प्राचीन समय से ही मानव एवं जीव जगत के लिए नदियां एक वरदान के रूप में साबित हुई है। सम्पूर्ण विश्व के आर्थिक उत्थान, धार्मिक स्वरूप भावनात्मक एकता आदि की दृष्टि से नदियों का विशेष स्थान है। नदियां यहां आदिकाल से ही मानव के जीवन संस्कृति तथा सभ्यता की पोषक और मानव क्रियाओं का पालन कर रही है जिस प्रकार धरती की संरचना और मानव की सभ्यता एवं संस्कृति का विकास अविरल गति से पिछले लाखो करोड़ो वर्षो से चला आ रहा है इसमें ठहराव या शून्य जैसे स्थिति कभी भी नही आई। इसी प्रकार हमारी प्राचीन सरस्वती नदी को ही ले जिसके प्रवाह के ठोस प्रमाण हमे उपग्रह चित्रों से इनके पांच प्राचीन मार्गो का स्पष्ट संकेत मिला है। प्रत्येक मार्ग पर वह हजारों वर्षों तक बहती रही है रेगिस्तानीकरण या अन्य प्राकृतिक कारणों से इसके पुराने मार्ग बिगड़ते रहे नए बनते गए। इन्ही नदी घाटियों के सहारे अनेक सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का विकास क्रम बढता गया। अतः मानवीय क्रियाओ में प्राचीन काल से ही नदियों का उल्लेखनीय योगदान विकास का कारक बनी हुई है।

**मुख्य शब्द :** दूषदूती नदी, भौगोलिक संरचना, पुरातत्वीय महत्व।

**प्रस्तावना**

सरस्वती दूषदूती नदी घाटी की भौगोलिक संरचना एव महत्वता का उल्लेख हमे विविध प्राचीन पूराणिक ग्रन्थो एवं पुरात्विक साक्ष्यो से प्राप्त हुये है। अनेक शोधर्थियों के द्वारा इस संदर्भ में शोध ग्रन्थ लिखे जो चुके है। प्रकाशित ग्रन्थो से यह आभास होता है कि विश्व की अधिकांश नदियों के किनारे मानव सभ्यताएं पनपी है जिसका मुख्य कारण जल की पर्याप्त उपलब्धता एवं वहां नदियो द्वारा लाई गई मिट्टी से भूमि का अधिक उपजाऊ होना था। अतः प्रदेश के विभिन्न नदी घाटियों में पुरापाषाण काल से लेकर कास्य युगीन ताम्रयुगीन एवं वाद की सभ्यताएं पनपी पल्लवित हुई और यही काल के ग्रास में समा गई। सरस्वती नदी अब विलुप्त हो चुकी है परन्तु इसके प्रवाह के ठोस प्रमाण हमे इसके प्रवाह क्षैत्र में पाये जाने वाले पुरा अपवाह एवं ढके हुए अपवा तंत्र के रूप में दृष्टिगोचर होते है। सरस्वती नदी घाटी की भौगोलिक संरचना एवं पुरातत्वीय महत्व का सस्मरण करना ही इस शोध का उद्देश्य है सरस्वती नदी जिसकी महिमा की प्रंशसा वेदो में की गई है, जिसके तह पर )ग्वेद तथा सम्भवतः वेदत्रथी के दो वेदो यजुस व साम की रचना हुई थी ओर जहा ) ऋषियों ने आने वाले युगो में भारतीय दर्शन, सामाजिक विचारधारा एवं संस्कृति को एक नया मोड दिया जिसके तटों पर हडप्पा एवं आर्य सभ्यता एवं संस्कृति पनपी थी, जो प्राचीन समय में एक स्वतन्त्र नदी के रूप में अरब सागर से मिलती थी। सरस्वती नदी के समकक्ष ही अब शुष्क इसकी सहायक नदी दूषदूती थी, जहां भी हडप्पा और आर्य सभ्यता एवं संस्कृति फली–फूली थी। इस प्रकार प्राचीन सभ्यताओं एवं मानव विकास की धरोहर सरस्वती व इसकी सहायक नदियों का पुरातत्वीय महत्वता का न केवल मानवीय विकास में महत्व बढा, बल्कि इसके साथ अनेक सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का समन्वय हुआ, जो हमारे सम्पूर्ण विश्व में दृष्टिगोचर होता है। जिसमें हमारी आर्थिक एवं सामाजिक क्रियाओं को बढ़ावा मिला।

**शोध का उद्देश्य**

इस प्रकार नदी घाटी का हमारे मानवीय जीवन में महत्वता पर परिलक्षित करना ही इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

**शोध में सरस्वती दूषदूती नदी घाटी की भूमिका**

प्राचीन सभ्यताओं में पनपी सरस्वती दूषदूती नदी घाटी की महत्वता के कारण सम्पूर्ण भारत में सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक गतिविधियों के क्षैत्र में इनकी भूमिका अग्रणीय रही है।

ऋग्वेद में नदी स्तुति में सरस्वती नदी की महिमा में बड़े विस्तार से लिखा है कि

अम्वित्मे नदीत्मे देवित्मे सारस्वती।
अप्रशस्ता इवः स्मति प्रशस्तिम्व नस्कृधि।।

वैज्ञानिकों के अनुसार सतलज ओर यमुना नदियों का संगम, प. और पू. से सरस्वती नदी के साथ पंजाब में "सतराना" नामक स्थान के समीप था। उस समय यह बड़ी "बेगवती नदी" थी। रोपड के समीप जहां सतलज नदी प. की और एकाएक 90 डिग्री के कोण पर घुमाव लेती है वहां से सतराना (पंजाब) तक प्राचीन जल प्रवाह मार्ग उपग्रह चित्रो में साफ–2 दिखाई देता है। इस प्रकार यमुना नदी के तीन प्राचीन प्रवाह पथ खोज लिए गए है जिनसे यह संकेत मिलता है कि पहले यह नदी पंजाब में सतराना के पास सरस्वती नदी में मिलती थी, फिर यमुना नदी दूषदूती नदी के पू. में लगभग सामान्तर बहती हुई राज. मे भादरा के पास दूषदूती नदी में गिरने लगी जो स्वयं आगे चलकर सूरतगढ़ के पास सरस्वती नदी से मिलती थी। कालान्तर में भारतीय उपमहाद्वीप में भूगभर्गीय परिवर्तनो के कारण यमुना नदी पू. और सतलज नदी प. की और बहने लगी।

**शोध में सरस्वती दूषदूती नदी का प्रवाह प्रारूप**

शोध कार्यो के दौरान हमे यह ज्ञात हुआ है कि प्राचीन सरस्वती दूषदूती नदी की भौगोलिक संरचना की व्याख्यता अधिक होने के कारण इसका प्रवाह क्षेत्र धीरे–धीरे विस्तृत होता गया। वस्तुतः प्राचीन काल में यह नदी कई मार्गो से होकर गुजरती थी, परन्तु कालान्तर में प्राकृतिक कारणो से इन नदियो में जल की आवक कम होती गई और धीरे–धीरे इन मार्गो में से कई मार्ग एक समतल भू–भाग में परिवर्तित होते गये। इन्ही मार्गो में से कुछ मार्गो पर वर्तमान की कुछ नदियॉ प्रवाहित हो रही है। सरस्वती दूषदूती नदी के इन्ही प्राचीन मार्गो का विवरण निम्नानुसार है।

सरस्वती नदी का सबसे पहला मार्ग सतराना, सिरसा, नोहर सूरजनगर, सामराऊ, पच भदरा होकर था और दूसरा मार्ग थोड़ा प. में सतराना, सिरसा से लूणकरणसर, बीकानेर, सामराऊ पच भदरा होकर था। इन पहले दोनो मार्गो में उदगम से सिरसा तक सरस्वती नदी का सामान्य मार्ग रहा और बाड़मेर जिले के पच भदरा से आगे लूणी नदी के साथ संगम के बाद सरस्वती नदी का मार्ग लूणी नदी का वर्तमान मार्ग ही रहा है। अर्थात उस समय लूणी नदी सरस्वती नदी सरस्वती नदी में बाई ओर से मिलने वाली एक सहायक छोटी नदी थी। सरस्वती और लूणी नदियो के प्राचीन संगम स्थल के पास वर्तमान की लूणी नदी 90 डिग्री के कोण पर द. की ओर बाई तरफ घुमाव लेती प्रतीत होती है।

उपरोक्त संगम स्थल से आगे का बहाव मार्ग लूणी नदी का न होकर सरस्वती नदी का मूलमार्ग था। लूणी नदी पच भदरा के पास बाई ओर से आकर सरस्वती नदी में मिलती थी।

सरस्वती नदी द्वारा तीसरा मार्ग अपनाने पर यह प. की ओर सरक गई जिससे संयुक्त सरस्वती लूणी नदी का 90 डिग्री का कोण यथा स्थान रह गया और संगम से आगे की रोब रही नदी सरस्वती के बजाय लूणी नदी कहलाई जाने लगी। इस प्रकार से लूणी नदी साकडा नदी का ही भाग होने से यह पूरब की ओर विस्तारित सिन्ध नदी के डेल्टा का ही भाग है। सरस्वती नदी द्वारा तीसरा मार्ग अपनाए जाने से लूणी नदी से इसका स्थाई विच्छेद हो गया ओर यह सिरसा से और द. प. दिशा में रूख करते हुए पीलीबंगा, रंगमहल, सूरतगढ़, अनूपगढ़ खानगढ, इसलामगढ, घरमीखू, घंटीयाली, घोटारू, शाहगढ, बाबूअली, राजार, मेहाल, मुगरा से होती हुई सिन्ध प्रान्त में हाकडा–नारा नदी में मिल गई।

सरस्वती नदी का चौथा मार्ग हनुमानगढ़ (भटनेर) पीलीबंगा, सूरतगढ़, अनूपगढ़ फोर्ट अब्बास (फूलडा) मारोठ से होकर आगे हकरा नदी का मार्ग रहा है इसका पांचवां एवं अंतिम मार्ग अनूपगढ़ तक तो पूर्ववर्ती चौथा मार्ग ही रहा है, परन्तु आगे बाये और खाजूवाला (बोरियांवाला) के पास यह नदी आचाक लुप्त हो गई। उपग्रह चित्रो के अनुसार अनूपगढ़ से आगे द. प. में स्थित सतराना गांव (अनूपगढ़ राज.) के पास घग्घर नदी दो धाराओं में बंट गई। एक दायी धारा सतराना से मारोठ, और दूसरी धारा सतराना से गेरियांवाली तक थी। यह दोनो पुरातन मार्ग अब घग्घर नदी के सूखे तल के रूप में विद्यमान है।

इस प्रकार सरस्वती नदी के पहे तीन मार्गो का पतन मुख्यतः रेगिस्तान के फैलाव से उत्पन्न अवरोधो के कारण हुआ था, जबकि चौथा मार्ग एव पॉचवे मार्ग का पतन यमुना और सतलज नदियो द्वारा पंजाब में इसे छोड़कर पूरब और प. की ओर बहने के कारण हुआ है।

वस्तुतः उ. और प. राजस्थान की भौगोलिक और वस्तु सरंचना सरस्वती और दूषदूती नदियो द्वारा प्रभावित होती थी। समय–2 पर सतलज एवं यमुना नदियों का जल इन दोनो नदियों को मिलते रहने से इन नदियों की घाटियों और बीच के क्षैत्र में दोआब जैसी सरसता एवं सभ्यता बनी रहती थी। दूषदूती नदी जिसे प्राचीनकाल में चित्रांग नदी कहते थे, हिमालय की तलहटी क्षेत्र से निकलकर कुछ दूर तक यमुना नदी से द. में सामान्तर बहती हुई, यमुना नहर के साथ–साथ राज. में प्रवेश करके झांसल, छानी, भादरा, नोहर, रावतसर के पास से हेाती हुई सूरतगढ़ से (5 किलोमीटर) उतर 1700 ई.पू. के आसपास जहां यमुना नदी दूषदूती नदी का साथ छोड़ गई वही इसी काल में ऋग्वेद और महाभारत के बीच के काल में सतलज नदी भी सरस्ती नदी का साथ छोड़ गई। जिससे आगे की घग्घर व हकरा नदी भी सूख गई।

उपग्रह परिदृश्यों से यह ज्ञात होता है कि बाद मे सरस्वती नदी एक लुप्त धारा थी और व्यास नदी

सतलज नदी की सहायक नदी नही होकर स्वतंत्र रूप में बहती हुई मुल्तान से काफी नीचे शाह सुल्तान के पास चिनाव नदी में मिलती थी।

**निष्कर्ष**

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि सरस्वती दूषदूती नदी घाटी की भौगोलिक संरचना एवं पुरातत्वीय महत्वता का स्पष्टकरण वर्तमान में दृष्टिगत हो रहा है। चूंकि उ. और प. राजस्थान की भौगोलिक सरंचना सरस्वती और दूषदूती नदियों से प्रभावित हुई और समय–2के साथ इन्ही नदी घाटियों के सहारे अनेक सभ्यताओं का विकास क्रम भी होता रहा। कालान्तर सतलज नदी पुनः द. से पूर्व की और लौट आई और वर्तमान के पंजाब में ;नाईवालाद्ध नाम से जाने जाने वाली नदी तल के प्रवाह में बहती हुई भटनेर (हनुमानगढ़) के पास सरस्वती नदी से आकर मिली। जिनका विवरण हमें हमारे प्राचीन स्त्रौतो ऋग्वेदिक महाभारत एवं पुरातत्विक साक्ष्यों में प्राप्त हुये है। वस्तुतः वर्तमान में इन नदी घटियों का अस्तिव पूर्णतः विघटित हो चुका है लेकिन इन्ही नदियों के के मार्गो पर नवीन नदियों के उदभव होने से हमारी सभ्यता व संस्कृति की सामाजिक आर्थिको गतिविधियों को बढावा मिला।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

*भटनेर का इतिहास*

*प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, अलैक्जेंड कचिघम*

*प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल–विमल चरण लाहा*

*पूगल का इतिहास –हरिसिंह भाटी*

*An Archaeological tour along the ghaggar hakra river, sir aurel stein*

*The Land of five rivers,h kennedy trevaska*

**अन्य संदर्भ स्रोत**

*दौलत सिंह चौहान का आलेख,, राजस्थान पत्रिका, दिनांक 10–11 अप्रैल 1917*